भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-1 /अंक-2/ अगस्त-2021

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -1 / अंक -2 / अगस्त -2021

For Private Circulation Only

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

मूल्य
आपका कीमती समय

सम्पर्क सूत्र
www.bhartiyaparampara.com
paramparabhartiya@gmail.com

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

अगस्त माह

Saka Calendar- 1943 Vikram Samvat- 2078 Ayan- Daksinayan Ritu- Varsha

01 रविवार, मित्रता दिवस
श्रावण, कृष्ण अष्टमी

02 सोमवार, आदि पेरुक्कु, श्रावण सोमवार व्रत श्रावण, कृष्ण नवमी

03 मंगलवार, मंगला गौरी एवं रोहिणी व्रत
श्रावण, कृष्ण दशमी

04 बुधवार, कामिका एकादशी व्रत
श्रावण, कृष्ण एकादशी

05 गुरुवार, प्रदोष व्रत
श्रावण, कृष्ण द्वादशी

06 शुक्रवार, मासिक शिवरात्री
श्रावण, कृष्ण त्रयोदशी

07 शनिवार,
श्रावण, कृष्ण चतुर्दशी

08 रविवार, हरियाली अमावस्या
श्रावण, कृष्ण अमावस्या

09 सोमवार, श्रावण सोमवार व्रत
श्रावण, शुक्ल प्रतिपदा

10 मंगलवार,मंगला गौरी व्रत,इस्लामी नव वर्ष श्रावण, शुक्ल द्वितीया

11 बुधवार, हरियाली तीज, अन्दल जयंती
श्रावण, शुक्ल तृतीया

12 गुरुवार, विनायक चर्तुथी
श्रावण, शुक्ल चर्तुथी

13 शुक्रवार, नाग पंचमी, कल्की जयंती
श्रावण, शुक्ल पंचमी

14 शनिवार, स्कंध षष्ठी
श्रावण, शुक्ल षष्ठी

15 रविवार, स्वतंत्रता दिवस, तुलसीदास जयंती श्रावण, शुक्ल सप्तमी

16 सोमवार, श्रावण सोमवार व्रत
श्रावण, शुक्ल अष्टमी

17 मंगलवार, मंगला गौरी व्रत, मलयालम नव वर्ष श्रावण, शुक्ल दशमी

18 बुधवार, पुत्रदा एकादशी
श्रावण, शुक्ल एकादशी

19 गुरुवार, दामोदर द्वादशी, मुहर्रम
श्रावण, शुक्ल द्वादशी

20 शुक्रवार, प्रदोष व्रत, वर लक्ष्मी व्रत
श्रावण, शुक्ल त्रयोदशी

21 शनिवार, ओणम
श्रावण, शुक्ल चतुर्दशी

22 रविवार, रक्षाबंधन, नारली पूर्णिमा. गायत्री जयंती. संस्कृत दिवस
श्रावण, शुक्ल पूर्णिमा

23 सोमवार,
भाद्रपद, कृष्ण प्रतिपदा

24 मंगलवार, तीज सिंजारा
भाद्रपद, कृष्ण द्वितीया

25 बुधवार, कजरी, सातूडी तीज
भाद्रपद, कृष्ण तृतीया

26 गुरुवार, बहुला चौथ व्रत, संकष्टी चर्तुथी भाद्रपद, कृष्ण चर्तुथी

27 शुक्रवार,
भाद्रपद, कृष्ण पंचमी

28 शनिवार, हल षष्ठी, बलराम जयंती उपछठ व्रत भाद्रपद, कृष्ण षष्ठी

29 रविवार, शीतला सप्तमी
भाद्रपद, कृष्ण सप्तमी

30 सोमवार, कृष्ण जन्माष्टमी, आघाकाली जयंती
भाद्रपद, कृष्ण अष्टमी

31 मंगलवार, दही हाण्डी, रोहिणी व्रत
भाद्रपद, कृष्ण नवमी

आदि पेरुक्कु

आदि पेरुक्कु पर्व समृद्धि और उर्वरता का प्रतिक है जिसे तमिलनाडु में मानसून त्यौहार के रूप में मनाया जाता है| यह पर्व तमिल महीने के 18 वें दिन मनाया जाता है| महिलाओं द्वारा मनाए जाने वाले इस पर्व के दिन जल-अनुष्ठान के रूप में, प्रकृति का सम्मान किया जाता है| इस दिन उफनती नदियों से पानी लेकर माँ पार्वती की पूजा करते है और चावल के अलग अलग व्यंजन जैसे- **नारियल चावल, मीठा पोंगल, दही चावल, बहला चावल, नींबू चावल और इमली चावल** इत्यादि बनाकर भोग लगाया जाता है|

इस त्यौहार के दिन सुबह सवेरे महिलाएं पीला धागा, चावल, गुड़, नारियल, केले, दीपक, हल्दी, कुंकुम और फूल आदि पूजा सामग्री लेकर तालाब, नदी या जलाशय आदि के किनारे पर जाती हैं। पूजा शुरु करने से पहले वे पानी में डुबकी लगाती हैं। इसके बाद **'अभिषेकम'** करते है जिसमे वे धरती माता के स्वरूप के रुप में मिट्टी की ढेरियां बनाती हैं। इसके साथ साथ केले के पत्तो पर चावल के आटे को पानी में गुड़ मिला कर छोटे गड्डे नुमा आकार का निर्माण किया जाता है। इसमें घी डाल कर दीप प्रज्जवलित करती है। दीये के साथ फूल, हल्दी और पीला धागा केले के पत्ते में रख कर नदी में अर्पित किया जाता है। आदि पेरुक्कु उत्सव तिरुचरापल्ली के अलावा कावेरी नदी के किनारे बसे इरोड, तंजावुर और सलेम में भी बहुत धूमधाम से मनाया जाता है।

स्वतंत्रता दिवस

'भारतीय परम्परा' की प्रथम वर्षगांठ

"भारतीय परम्परा" की है आज प्रथम वर्षगांठ |
स्वतंत्रता सेनानियों से है जिंदगी में आजादी का ठाठ ||

त्यौहार, संस्कृति, रीति रिवाज और इतिहास है हमारा आधार |
जो भारत के गौरव को बढ़ाएगा देश विदेश में अपरंपार ||

अपने खून से सींच उन्होंने आजादी का बीज बोया है |
ना जाने किस-किस मां ने सरहद पर अपने लाल को खोया है ||

जो भारत माता की जय जयकार करते अपनी जान पे खेल गए |
वो ना जाने गुलामी की बेड़ियों के कितने ताले खोल गए ||

हम ने तो आज उन्हें वीरों और शहीदों के रूप में संजोया है |
लेकिन उस बच्चे से पूछो जो पहली बार भी बिन पिता के रोया है ||

हर जाति - धर्म को पनाह दे हमारा भारत **"विश्व गुरु"** कहलाया है |
हम भारत हमारे भाव भारत इसी को **"भारतीय परम्परा"** में सजाया है ||

क्यों कहते हैं सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा |
क्योंकि **भारतीय परम्परा कर्म** और **भारतीयता धर्म** है हमारा ||

- निमिषा जी राठी

ओणम पर्व

ओणम पर्व के साथ साथ चिंगम महीने में केरल में चावल की फसल का त्योहार और वर्षा के फूल का त्यौहार मनाया जाता है | ओणम का पर्व **भगवान विष्णु के वामन अवतार** से जुड़ा हुआ है, इस पर्व को **केरल में राजा महाबलि के स्मृति** में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

जिस प्रकार उत्तर भारत में दशहरा तथा दीपावली को धूमधाम से मनाया जाता है उसी प्रकार ओणम का पर्व केरल राज्य का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है, इसे देश-विदेश में रहने वाले लगभग सभी मलयाली लोगो मनाते है। इस पर्व पर लोग अपने घरों को साफ-सुथरा करके अच्छे तरीके से सजाते हैं। साथ ही इस दौरान **नौका दौड़, कथककली तथा गायन** जैसे कई सारे मनोरंजक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते है। ओणम का पर्व मनाने वाले लोग इस दिन अपने घरों के आँगन मे फूलों की पंखड़ुयों से सुंदर रंगोलिया बनाते हैं, स्थानीय भाषा में इन रंगोलियों को **'पूकलम'** कहा जाता है। राजा बलि की मूर्ति पूलकम के बीच में भगवान विष्णु के वामन अवतार की मूर्ति के साथ स्थापित की जाती है। इस दिन घरों में कई तरह के विशेष पकवान भी बनाये जाते हैं जैसे - **कालन, ओलन, अविअल, पचड़ी, इंजीपुल्ली, थोरान, सांभर, परिअप्पु करी और केले का चिप्स**|

ओणम के दिन लोग मंदिरों में पूजा करने नही जाते है बल्कि इस दिन वे अपने घरों में ही पूजा करते है। मलयाली लोगों का मानना है कि इस दिन घर में पूजा से करने घर में समृद्धी आती है।

साथ ही इस पर्व को लेकर यह मान्यता भी है कि **ओणम के दौरान राजा बलि पाताल लोक से पृथ्वी पर आते हैं** और अपनी प्रजा के लिए खुशियां लाते है। आठ दिनों तक फूलों की सजावट का कार्य चलता है और नौवें दिन हर घर में भगवान विष्णु की मूर्ति बनाकर पूजा की जाती है।

इस दिन महिलाएं विष्णु पूजा करते हुए इसके चारो तरफ नाचते-गाते हुए तालियां बजाती है। रात को गणेशजी और श्रावण देवता की मूर्ति बनाई जाती है। इसके पश्चात बच्चे वामन अवतार को समर्पित गीत गाते है। मूर्तियों के सामने दीप जलाये जाते है, पूजा-पाठ के पश्चात दसवें दिन मूर्तियों को विसर्जित कर दिया जाता है।

वास्तव में ओणम वह पर्व होता है जब केरल में नई फसल तैयार होती है और प्राचीनकाल से ही भारत एक कृषि-प्रधान देश रहा है, यही कारण है कि इस दिन को इतने धूम-धाम के साथ मनाया जाता है।

ओणम त्यौहार के 10 दिन –

1. **अथं** - पहला दिन, जब राजा महाबली पाताल से केरल जाने की तैयारी करते है।
2. **चिथिरा** - फूलों का कालीन जिसे पूक्क्लम कहते है, बनाना शुरू करते है।
3. **चोधी** - पूक्क्लम में 4-5 तरह के फूलों से अगली लेयर बनाते है।
4. **विशाकम** - इस दिन से तरह तरह की प्रतियोगितायें शुरू हो जाती है।
5. **अनिज्ह्म** - नाव की रेस की तैयारी होती है।
6. **थ्रिकेता** - छुट्टियाँ शुरू हो जाती है।
7. **मूलम** - मंदिरों में स्पेशल पूजा शुरू होती है।
8. **पूरादम** - महाबली और वामन की प्रतिमा घर में स्थापित की जाती है।
9. **उठ्रादोम** - इस दिन महाबली केरल में प्रवेश करते है।
10. **थिरुवोनम** - मुख्य ओणम पर्व।

अगर आप अपने

'शब्दों के मोती'

भारतीय परम्परा

'की माला में पिरोना'

चाहते है तो हमें

सम्पर्क करें!

paramparabhartiya@gmail.com

आपका लेख वेबसाईट पर भी
प्रकाशित किया जाएगा

रक्षाबंधन पर्व

आज मैंने अपने दोनो बेटों से
एक दूसरे को राखी बँधवाई हैं|
एकदूजे के रक्षा एवं सुरक्षा
की क़सम भी दिलवाई हैं।
समझाना चाहती हूँ
उनको बस इतना...
जितना भी हम छोड़ जाएँगे
उतना मिल-जुल के संजोना हैं|
सभी रिश्तों के साथ साथ
अपना रिश्ता भी बख़ूबी निभाना हैं।
चाहे रहे वो दूर दूर...
सुख दुःख में पास ही रहना हैं,
अपनी पूरी निष्ठा से
एक दूजे का साथ निभाना हैं।
आज मैंने अपने दोनो बेटों से
एक दूसरे को राखी बँधवाई हैं।
एकदूजे के रक्षा एवं सुरक्षा
की क़सम भी दिलवाई हैं।

- योगिता जी सदानी

09, August 2021

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

सातु री तीज रो त्यौहार

वैशाख की गर्मी के बाद सावन की ठंडी फुहार बड़ी सुहानी लगती है एक तरफ आसमान प्यार बरसाता है तो दूसरी ओर धरती हरियाली ओढ़ने लगती है| सावन के झूले, तीज त्यौहार और साथ में बरखा की फुहार इन सबको देखकर मन झूमने लगता है|

हमारे यहाँ कहते हैं कि **नाग पंचमी से त्यौहारों का आगमन होता है और ऋषि पंचमी से समापन**|
श्रावण मास में शिवालयों में शिव भक्ति की गूंज सुनाई देती है, हरियाली अमावस्या में मालपुये की मिठास और उसके बाद छोटी तीज सिंजारा और लहरिये की बात है खास... कुंवारी हो या ब्याहता सब के लिए खास तीज का यह त्यौहार|

बड़ी तीज के सिंजारे का अपना ही महत्व है इस दिन सुहागीने लहरिया की साड़ी पहनती है और सोलह सिंगार करती है अविवाहित कन्या भी मेहंदी लगाती है| जिनकी सगाई हो जाती उनके लिए छोटी तीज का सिंजारा भी महत्वपूर्ण होता है, उनके ससुराल से लहरिया की साड़ी, श्रृंगार का सामान और जेवर मिठाई आदि आते हैं|

मेहंदी रचे हाथ और सातू की मिठास नीमड़ी माता की पूजा और दूध भरी परात और उसमें पायल, ककड़ी, नींबू, मोती, दीपक और नीमड़ी (लिमड़ी) के दर्शन कर चाँद को अर्घ्य देना और उसके बाद सत्तू पासना सब कुछ उमंगों से भरा हुआ| विवाहित महिलाओं का सत्तू का पिंडा (लड्डू) उनके पति द्वारा पासा/खोला जाता है और लड़कियों के सत्तू का पिंडा उनके भाई के द्वारा पासा/खोला जाता है|

बड़ी तीज के दिन जौ, चने, चावल, और गेंहूँ के आटे का सत्तू बनाया जाता है (एक प्रकार की मिठाई जो आटे को भूनकर शक्कर घी के साथ बनाई जाती है), 4 साल एक धान के आटे का सत्तू पासा(खाया) जाता है जिसमे चने, गेहूँ, चावल और जौ का सत्तू होता है| पिंडे के साथ सग, अकड़ी और नीमड़ी (एक-एक लड्डू) होती है, जिन्हें पूजा में काम लेते है और सग को अपने बड़े (सास, ननद या जेठानी) को नेक के साथ पैर छू कर दिया जाता है|

सच में हमारी भारतीय परम्पराओ में संस्कार और स्नेह दोनों ही शामिल है।

- संगीता जी दरक

10, August 2021

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

पूजा की विधि और कथा

नीम की डाली/टहनी से तीज की पूजा क्यों करते हैं?

- नीमडी माता की कथा
- तीज माता की कथा
- गणेश जी की कथा
- लपसी तपसी की कथा

- तीज की पूजा कैसे करते हैं?
- संकल्प कैसे लेते हैं?
- चाँद को अरख कैसे देते हैं?

- चौथ माता की कथा
- छींक चौथ माता की कथा
- गणेश जी की कथा
- लपसी तपसी की कथा

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है| यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें|

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुवे है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है|

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें|

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये|

जब से अपनों के अलग
अलग मकान हो गए,
तब से सब एक-दूसरे के
मेहमान हो गए ॥

कभी खत, कभी राखी,
कभी मनीआर्डर आते थे,
वो दिन कुछ गजब
थे जब डाकिये भी
खुशियाँ लाते थे ॥

‘दोस्ती’

“पैसे की जरूरत सिर्फ
जीने के लिए होती है,
हँसने के लिए हमेशा
दोस्तों की जरूरत
होती है ॥”

क्या बनाने आये थे
क्या बना बैठे,
कहीं मंदिर बना बैठे
कहीं मस्जिद बना बैठे,
हमसे तो जात
अच्छी है परिंदो की
कभी मंदिर पर जा बैठे,
तो कभी मस्जिद
पर जा बैठे ॥

‘जिनके अकेले चलने के
हौसले होते है, एक दिन
उनके पीछे काफिले होते हैं’

‘कडवी दवा के जैसे हम
याद उनको तब आते
जब उनको होता गम’

- संगीता जी दरक

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing
Logo Design
Graphic Design
Web Design
Mobile App
Animated Video
Digital Marketing
www.mxcreativity.com

Kings wed Queens
WEDDING
- LOGO
- INVITATION
- STATIONERY
- WEBSITE
- MOBILE APP
- Festival Greeting
Create your MEMORIES
With Us
www.kingswedsqueens.com

Thakur Complex
WHITE BERRY
RESIDENCY
FLAT AREA
(418 - 713 Carpet)
- Library
- Gymnasium
- Tennis Court
- 3 Levels of Podium Parking
- Double Height Entrance Lobby
- Terrace Garden with Lift
accessibility
- Relaxing Corner
- Work from home desk
- Other Modern Amenities
MAHA RERA NO : P51800027240
98705 80810

पाटी साप्टा

बंगाली व्यंजन

- पूनम जी राठी

सामग्री –

- 250 gm - चावल पाउडर, 1 - नारियल, 1 कप - चीनी, आधा कप - आरारोट, 4 चम्मच - काजू व किशमिश, 1 कप - तेल तलने के लिए

विधि –

- नारियल को कद्दूकस कर लें|
- आरारोट व चावल के पाउडर में पानी मिलाकर पेस्ट बनाये|
- गैस पर कढ़ाई चढ़ाएं एवं एक कप पानी में चीनी डालकर अच्छी तरह पकाएं| जब चीनी की चाशनी बन जाए तो उसमें कद्दूकस किया हुआ नारियल डाल दे व अच्छे से भूने| जब पानी सूख जाए तो उसे कड़ाई से निकालकर अलग बर्तन में रख ले|
- एक पैन को गैस पर चढ़ाएं उसमें थोड़ा सा तेल डालें तथा आरारोट व चावल के मिश्रण को आधा कप पानी में डालकर पकाएं| पानी जब सुख जाए तब मिश्रण को गोल गोल रोटी के आकार में बेल ले तथा सुनहरा होने तक उलट-पुलट कर तल ले|
- नारियल में काजू किशमिश मिलाकर एक रोटी में भरकर रोल बना ले|
- पाटी साप्टा स्वादिष्ट व्यंजन है जिसे नाश्ता में परोसे| यह एक बहुत ही बेहतरीन और स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन है|

उपयोगी सुझाव –

- लौकी का हलवा बनाते समय मलाई डाल के भूनने से हलवा ज्यादा स्वादिष्ट बनेगा|
- दही बड़े बनाते समय पिसी हुई दाल में थोड़ा सा दही मिला के फेंटे तो दही बड़े अधिक स्वादिष्ट और मुलायम बनेंगे|
- दही जमाते समय दूध में थोड़ा सा नारियल का टुकड़ा डाल देने से दही 2-3 दिनों तक ताजा रहेगा|

एक ऐसा व्रत जो खडे रहकर होता हैं

उपछठ का व्रत होता है जो भादवा माह में कृष्ण पक्ष की छठ यानि षष्ठी तिथि को आता है| सायंकाल के समय स्नान करने के बाद तैयार होकर खड़े रहते है जब तक की चन्द्रमा को अरख ना दे देवे| उसके पश्चात भोजन ग्रहण किया जाता है|

उपछठ व्रत कथा के लिए आइकन को र्स्पश करें

बलराम जन्म दिवस की हार्दिक बधाई

इस दिन द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम का जन्म हुआ था। बलराम जी का **शस्त्र हल और मूसल** है इसीलिए इन्हें **हलधर** भी कहा जाता है| भारत देश कृषि प्रधान देश है और हल कृषि के लिए प्राणतत्व है इसलिए बलराम जन्मोत्सव पर हल की पूजा करने का विधान है| बलराम जन्मदिवस को **हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी और चंद्र छठ** के नाम से भी जाना जाता है।

वजन बढ जाये तो क्या करें?

तन का बढे तो व्यायाम, मन का बढे तो ध्यान,
और पैसो का बढे तो दान ॥

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

कुछ लोगों को आपकी
याद बस तब आती है
😂 😂 😂 😂 😂
जब चमत्कारिक मैसेज
भेजने के लिए 11 लोगों
की जरूरत हो!!

भुख प्यास निकट
नहीं आवे..
🤣🤣🤣
मोबाईल जब
हाथ आवे

आज कल के बच्चों को
परीक्षा में ऐसे नम्बर
आते है- *97.6, 98.3, 99.2*
हमें तो ऐसे सिर्फ
बुखार आता था!! *lol!*

पत्नी - आटा कहाँ से
लाए थे??
पति - क्यों, क्या हुआ?
पत्नी - सारी रोटियाँ
जल गई

ज्ञान बाँटने वाली टॉप ५ युनिर्वसीटी
- पान का ठेला
- नाई की दुकान
- शराब पीया हुआ व्यक्ति
- रेल का लोकल डिब्बा
- *WhatsApp*

उपहार - लघु कथा

आराधना के चेहरे की खुशी देखते ही बनती ज्यों ज्यों रक्षा बंधन का समय निकट आता उसके अंतर्मन में स्नेह की भावनायें उमड घुमड़ कर बरसने को बेताब रहती। बच्चे भी मामा मामी के स्वागत हेतु उत्सुक रहते। अपने सारे जरूरी कामों को दरकिनार रखकर आराधना के भाई भाभी हर रक्षा बंधन पर हाजिर होते। सालभर मन में सहेजकर रखें सुख दुःख सब सांझा कर कितना हल्का महसूस करती। भाई भाभी का अपनापन कितना संबल देता उसे पापा को स्वर्ग सिधारे बारह वर्ष हो चुके थे पर भैया ने उनकी कमी कभी खलने नहीं दी बाबुल के आंगन में आज भी वह उतना ही स्नेह पाती।

मध्यम वर्गीय परिवार में पली बढ़ी आराधना स्वभाव से संतुष्ट ही थी। राखी पर भाई द्वारा भेंट की गई साडी पहन जब वह किटी पार्टी में गई तो उसकी सहेली मोनिका अपनी हिरे जडीत चमचमाती अंगुठी बताते हुए गर्वित होकर बोली यह मेरे भाई ने रक्षा बंधन पर भेजी हैं। मोनिका का भाई केवल मंहगे उपहार भेज अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझता और वह भी इन्हें पाकर खुश हो जाती। जब मोनिका आराधना से पूछने लगी तुम्हें अपने भाई ने क्या उपहार दिया तो उसकी आंखों से खुशी के अश्क लुढक गालो पर आ गये रुंधे कंठ से कहने लगी मेरे भाई के उपहार को मैं आर्थिक रूप से तोल कर उस अमुल्य उपहार की अवहेलना नहीं कर सकती। अपनी व्यस्ततम जीवनशैली के चार दिन मुझे भेंट किये हैं और मेरे भाई भाभी मेरे मन की सारी पीड़ा हर कर गयें हैं उनका प्यार मुझे पुलकित कर देता है। आराधना कहने लगी उपहार की महत्ता भौतिक तौर पर आंकने से बेहतर होगा भावनाओं को तवज्जो दिया जायें। मोनिका की आंखें शर्म से झुक गई।

- राजश्री जी राठी

Econiture
Eco-Friendly Living

19, August 2021

Econiture furniture are made from 100% recycled plastic which diverts plastic waste that would have been destined for a landfill or ocean. Econiture epitomizes versatility and innovation thatcan be achieved in post-consumer plastic waste. The recycled plastic lumber is nonporous, nontoxic and a clean product free from any metallic inclusions.

These products are ecofriendly because it lessens deforestation and saves natural resources. Econiture Benches manufacturing process does not use any chemicals or color pigment while manufacturing.

BENEFITS

SUSTAINABLE ECONOMY

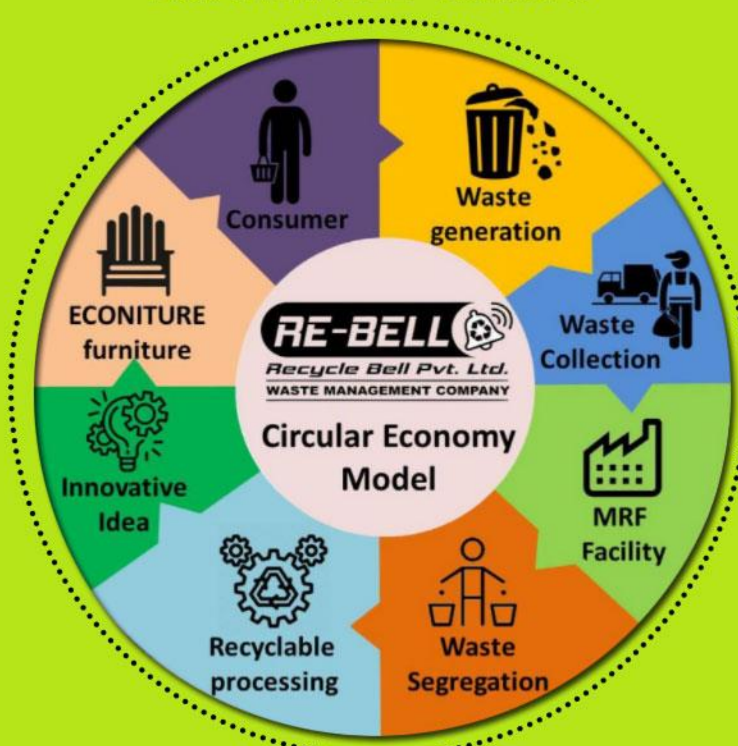

स्वतंत्रता दिवस

Poetry & Vocals By Babita Ji Poddar

15 अगस्त पर, कलम भी करती है,
भारत माँ तुझे नमन
भारत देश की अनुपम, अद्भुत मिट्टी...

कविता सुनने के लिए आइकन को र्स्पश करें

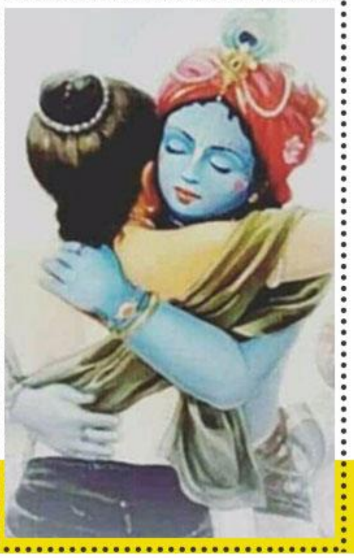

मित्रता दिवस

Poetry & Vocals By CA Rukman Ji Ladha

दोस्त हो ग़म में और ख़ुशी में
दोस्ती की हो बरसात
प्यार के फूल खिले दोस्ती में...

कविता सुनने के लिए आइकन को र्स्पश करें

रक्षा बंधन

Poetry & Vocals By Babita Ji Poddar

बहना ने ली, हाथों में रोली मोली चावल से भरीं
पूजा की रंग बिरंगी थाली,
लाल कुमकुम से किया...

कविता सुनने के लिए आइकन को र्स्पश करें

लोक गीत

Vocals By Aditya Vikram Ji Maliwal

"नीला घोड़ा रा असवार, म्हारा मेवाड़ी सरदार"
अनन्त कोटि नमन नमन स्वाभिमान एवं
कर्तव्यनिष्ठा के अप्रतिम प्रतिमान...

लोक गीत सुनने के लिए आइकन को र्स्पश करें

जिंदगी

जिंदगी कैसी है पहेली जाने... कभी ये हँसाये कभी ये रुलाये...

कितनी सच्चाई है इन दो पंक्तियों में, सच जिंदगी एक पहेली ही तो है| आगे क्या होने वाला है हमें कुछ भी पता नही होता| कभी सुख की घडी आती है तो कभी दुःख की...! हमारा दिल कभी खुशी से झुम उठता है तो कभी गम के सागर में हिलोरें मारता है|

हम सबके जीवन में बहुत सारी घटनाये या ऐसे संयोग आते है जिनसे हमे गुजरना पडता है और इन सबसे हमे कुछ ना कुछ सीख जरूर मिलती है| ये हमारे पर निर्भर करता है कि जीवन मे हम उन अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कैसे करते है| कठिनायों का सामना भय से करेंगे या फिर डटकर उनका मुकाबला करेगें या फिर आत्मविश्वास के साथ डटे रहेगे| **"आत्मविश्वास"** ये हमारे जीवन का बहुत ही अहम पहलू है| किसी भी काम को यदि हम साहस, हिम्मत और लगन पूर्वक करेंगे तो वो निश्चित ही होके रहेगा| अगर जिंदगी को बेहतरीन तरीके से यापन करना है तो अपने तरीके से चलना चाहिये क्योंकि हमे पता है हमारी मंजिल क्या है| जिंदगी बहुत छोटी है और हमारी इच्छाये अनगिनत है..! इसीलिए जो भी ख्वाहिशें या सपने है उन्हें पूरा जरूर करें, ये मत सोचिये की लोग क्या कहेंगे... लोगों की तो आदत है आज कुछ कहेंगे और कल कुछ... इसीलिये छोडिये सबके बारें में सोचना और वही करिये जो आपका दिल चाहता है | जीवन में सबको एक साथ खुश नहीं किया जा सकता है|

जिंदगी मे बहुत सारे रिश्ते ऐसे होते है जिन्हे निभाते हुए हम अपने आपको भूल जाते है| इसलिए उन रिश्तों के साथ चलते चलते ही अपने अरमानों को भी पूरा करों, फिर देखों जीवन की गाड़ी कितनी आसानी से चलने लगती है| तभी आप कह सकते है ये हमारे 'मन की जिंदगी' है...हमारी 'इच्छाओ की जिंदगी' है.. ये हमारे 'अरमानो की जिंदगी' है ...! इसलिए तो कहा है - **जिंदगी एक सफर है सुहाना... यहाँ कल क्या हो... किसने जाना.....!**

- सोनल जी पवार

21, August 2021

दही - हांडी

दही हांडी पर्व क्यों और कैसे मनाया जाता है ?

कृष्ण जन्माष्टमी या गोकुलाष्टमी के एक दिन बाद भाद्रपद की नवमीं को दही हांडी का पर्व बहुत हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व में **एक मिट्टी की हांड़ी (मटकी) में दही - माखन, दूध, फूल और पानी भर के ऊंचाई पर लटका देते है और फिर एक मानव पिरामिड बनाकर उस हांड़ी को फोड़ते है।** यह लीला उसी प्रकार घटित होती है जिस तरह बाल गोपाल बचपन में दही-माखन चुराते थे। महाराष्ट्र में इसकी रौनक सबसे अधिक देखने को मिलती है| यह पर्व अब मथुरा-वृन्दावन के साथ-साथ गुजरात और भारत के अन्य राज्यों में भी मनाया जाने लगा है।

दही हांडी पर्व क्यों मनाया जाता है ?

लीलाधर भगवान कृष्ण की लीलाओं में से एक लीला माखन चुराना था, जिसमे वो अपने दोस्तों के साथ मिलकर माखन चुराते थे| इससे परेशान होकर माता यशोदा और गोपियाँ माखन को एक मटके में भरकर ऊंचाई पर रस्सी से बांध करके लटका देती थी| फिर भी बाल गोपाल अपने दोस्तों के साथ मिलकर वो माखन चुरा लेते थे इसलिए उनको **माखनचोर** भी कहा जाता है| भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव के अगले दिन उनकी याद में सभी कृष्ण भक्त दही हांडी का पर्व मनाते हैं |

दही हांडी पर्व कैसे मनाया जाता है ?

इस पर्व की रौनक इतनी होती है कि सब लोग पुरे साल इंतजार करते है|

इस दिन मिट्टी की एक हांड़ी (छोटी मटकी) में दही, माखन, दूध, पुष्प, चॉकलेट, सूखे मेवे और पानी भरकर एक बहुत ऊँचे स्थान पर नारियल रखकर रस्सी से बांधकर टांग दिया जाता है, ऊंचाई तक़रीबन 15 फ़ीट या उससे भी ज्यादा की होती है| कुछ प्रशिक्षित युवाओं का दल दही हांड़ी फोड़ने के लिए आते है| इस दल के कार्यकर्ता एक दूसरे की पीठ पर चढ़ते है और ऊपर की तरह चढ़ते है, ऊपर जाते जाते लोगो की संख्या कम होती जाती है (पिरामिड जैसा आकार बनाते है)| इन कार्यकर्ताओं को **'गोविंदा'** कहते है| अंत में एक ही गोविंदा होता है जो हांड़ी को नारियल से फोड़ता है|

हांड़ी को फोड़ना सफलता और विजय का प्रतिक होता है| हांड़ी फोड़ते ही उसमे रखा दही - दूध आदि सब चीजें बारिश के समान नीचे गिरती है जो सभी की भीगो देती है और इसे प्रभु का प्रसाद माना जाता है| चारों ओर संगीत और नृत्य के साथ **"आला रे आला, गोविंदा आला"** की धूम मची होती है| इस पर्व का यह जोश और उल्लास देखते ही बनता है|

बॉम्बे उच्च न्यायालय ने गोविंदा की न्यूनतम आयु सीमा 18 वर्ष तथा हांडी लटकाने की अधिकतम सीमा 20 फीट तय कर दी है|

हर त्यौहार हमे कुछ ना कुछ जरूर सिखाता है, वैसे ही दही हांड़ी का यह पर्व हमे एकजुटता का पाठ पढ़ाता है| सब एक साथ मिलकर किसी भी कार्य को करें तो सफलता अवश्य मिलती है|

जय कन्हैया लाल की!!!

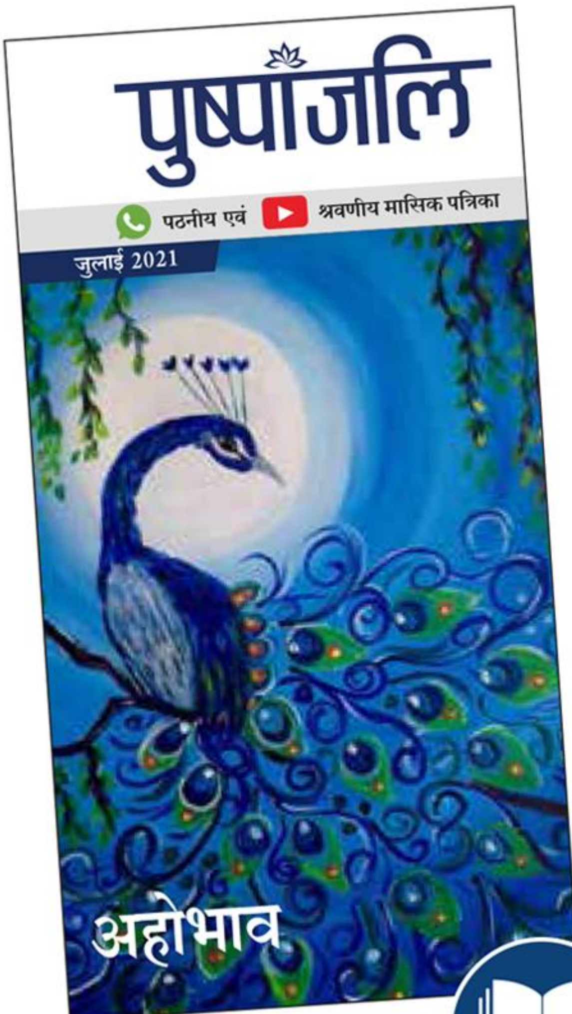

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचालित रूप से पहुँच जायेगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश नहीं भेज पाए तो निम्न मोबाइल नम्बर के वाट्सऐप द्वारा अपना संदेश भेजें।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

भारतीय परम्परा

मासिक ई-पत्रिका

के पुराने अंक को देखने के लिए किताब पर क्लिक करें !!

हार्दिक आभार

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

www.bhartiyaparampara.com